Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ जयापार्वती पूजा विधि ॥

॥ जय माँ जयापार्वती ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ व्रत का आरंभ और सामग्री ॥

१. तिथि और संकल्प

जयापार्वती व्रत गुजरात में प्रचलित पाँच दिवसीय शिव-पार्वती आराधना है। इसका आरंभ आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी पर और समापन कृष्ण तृतीया की पूजा के साथ माना जाता है। तिथि और स्थानीय समय अपने पंचांग से देखें।

२. सामान्य सामग्री

स्वच्छ चौकी, शिव-पार्वती का चित्र या प्रतिमा, जल, पुष्प, अक्षत, बिल्वपत्र यदि उपलब्ध हों, हल्दी-कुमकुम, धूप, दीप, फल और सात्त्विक नैवेद्य रखें। कुछ घरों में छोटे पात्र में गेहूँ के ज्वारे बोते हैं और रूई की माला या नगला सजाते हैं।

३. ज्वारे और पूजा स्थान

पहले दिन छोटे पात्र में स्वच्छ मिट्टी या उपयुक्त माध्यम में गेहूँ बोकर पूजा स्थान पर रखें। प्रतिदिन उतना पानी दें कि मिट्टी नम रहे, जल भर न जाए। ज्वारे और नगला की रीति वैकल्पिक स्थानीय परंपरा है; अपने घर की विधि का सम्मान करें।

पूजा स्थान सुरक्षित और साफ रखें। दीप को कपड़े, पौधों तथा बच्चों से दूर रखें। उपवास की तैयारी में अपनी आयु और स्वास्थ्य के अनुसार भोजन-पानी की योजना बनाएँ।

॥ प्रतिदिन पूजन और समापन ॥

४. प्रतिदिन की पूजा

स्नान के बाद स्वच्छ वस्त्र पहनकर गणेशजी का स्मरण करें। शिव-पार्वती को जल प्रतीक रूप में अर्पित करें; चित्र पर सीधे जल न डालें। फूल, अक्षत, बिल्वपत्र, कुमकुम, दीप और प्रसाद चढ़ाएँ। “ॐ नमः शिवाय” तथा माता गौरी का नाम स्मरण करें।

५. कथा और अंतिम रात्रि

वामन और सत्या की कथा पढ़ें या सुनें। अंतिम रात्रि में घर की रीति से भजन, आरती और ध्यान के साथ जागरण होता है। जागरण का विस्तृत, सुरक्षित क्रम अलग PDF में दिया गया है।

६. पारण और ज्वारे

अगली सुबह पूजा के बाद परिवार की परंपरा के अनुसार पारण करें। प्रचलित रीति में नमक, सब्जी और गेहूँ की रोटी वाला भोजन लिया जाता है। ज्वारे का सम्मानपूर्वक समापन करें; स्थानीय पर्यावरण नियमों का पालन करते हुए जल स्रोत को प्रदूषित न करें।

पूजा का क्रम, प्रसाद और आहार अलग-अलग घरों में बदलते हैं। कठिन उपवास अनिवार्य न मानें; आवश्यकता हो तो स्वास्थ्य के अनुसार सरल व्रत रखें।

॥ जय माँ जयापार्वती ॥